पाठ 10

सत्साहस

(संसार में कोई भी कार्य बिना साहस के नहीं होता किन्तु प्रत्येक साहस को सच्चे साहस की संज्ञा नहीं दी जा सकती। साहस की विभिन्न श्रेणियाँ होती हैं जिन्हें इस निबन्ध में समझाया गया है।)

संसार के काम-बड़े अथवा छोटे-साहस के बिना नहीं होते। संसार के सभी महापुरुष साहसी थे। बिना किसी प्रकार का साहस दिखलाये किसी जाति या किसी देश का इतिहास ही नहीं बन सकता। अपने साहस के कारण ही अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु आदि आज हमारे हृदयों में जागरूक हैं। आल्प्स पर्वत के विशाल शिखरों को पार करने वाले हनीवल और नेपोलियन का नाम वीरवरों के नामों के साथ केवल उनके अतुलनीय साहस के कारण ही लिया जाता है। यह साहस का ही प्रभाव था जिसने तैमूर, बाबर, शिवाजी, क्रोमवेल, रणजीत सिंह और संग्राम सिंह जैसे सामान्य व्यक्तियों को कुछ से कुछ कर दिया।

सत्साहसी के लिए केवल साहस प्रकट करना ही अभीष्ट नहीं। सूरवंश के क्रूरकर्मा बादशाह मुहम्मद आदिल पर, भरे दरबार में कितने ही सिरों और धड़ों को धरणी पर गिरा कर, एक मुसलमान युवक ने आक्रमण करने का असीम साहस प्रकट किया था। कारण यह था कि बादशाह ने उसके पिता की जागीर जब्त कर ली थी। इसी से उक्त युवक ने इतने साहस का काम किया। युवक मारा गया। उसके साहस और उसकी निर्भीकता का कुछ ठिकाना नहीं है परन्तु क्रोधान्ध होकर स्वार्थवश ऐसा साहस करने से युवक का यह कार्य किसी प्रकार प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार का साहस चोर और डाकू

भी कभी-कभी कर गुजरते हैं। राजा -महाराजा भी अपनी कुत्सित इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए कभी-कभी इससे भी बढ़कर साहस के काम कर डालते हैं। ऐसा साहस नीच श्रेणी का साहस है।

मध्यम श्रेणी का साहस प्रायः शूरवीरों में पाया जाता है। वह उनके उच्च विचार और निर्भीकता को भली-भाँति प्रकट करता है। इस प्रकार के साहस वाले मनुष्यों में बेपरवाही और स्वार्थहीनता की कमी नहीं होती परन्तु उनमें ज्ञान की कमी अवश्य पायी जाती है। अकबर बादशाह के पास दो राजपूत नौकरी के लिए आये। अकबर ने उनसे पूछा कि तुम क्या काम करते हो? वे बोले, "जहाँपनाह, करके दिखलाएँ या केवल कहकर?" बादशाह ने करके दिखलाने की आज्ञा दी। राजपूतों ने घोड़ों पर सवार होकर अपने-अपने बरछे सँभाले और अकबर के सामने ही एक-दूसरे पर वार करने लगे। थोड़ी देर बाद वे एक दूसरे पर बेतरह टूट पड़े। बादशाह के देखते-देखते दोनों घोड़ों से नीचे आ गिरे और मर कर ठंडे हो गये। इस प्रकार का साहस निःसन्देह प्रशंसनीय है, परन्तु ज्ञान की आभा की कमी के कारण निस्तेज-सा प्रतीत होता है।

सर्वोच्च श्रेणी के साहस के लिए हाथ-पैर की बलिष्ठता आवश्यक नहीं धन, मान आदि का होना भी आवश्यक नहीं। जिन गुणों का होना आवश्यक है; वे हैं - हृदय की पवित्रता तथा उदारता और चरित्र की दृढ़ता। ऐसे गुणों की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ साहस तब तक पूर्णतया प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता, जब तक उसमें एक और गुण सम्मिलित न हो। इस गुण का नाम है 'कर्तव्यपरायणता'। कर्तव्य का विचार प्रत्येक साहसी मनुष्य में होना चाहिए। इस विचार से शून्य होने पर कोई भी मनुष्य, फिर चाहे उसके और विचार कैसे ही उन्नत क्यों न हों, मानव जाति की कुछ भी भलाई नहीं कर सकता। अपने कर्तव्य से अनभिज्ञ मनुष्य कभी भी परोपकारपरायण या समाज-हित-चिन्तक नहीं कहा जा सकता। बिना इस विचार के मनुष्य अपने परिवार--नहीं-नहीं-अपने शरीर अथवा अपनी आत्मा का --- उपकार नहीं कर सकता। कर्तव्य-ज्ञान-शून्य मनुष्य को मनुष्य नहीं, पशु समझना चाहिए।

उच्चकोटि के साहस के लिए कर्तव्यपरायण बनना परमावश्यक है। कर्तव्यपरायण व्यक्ति के हृदय में यह बात अवश्य होनी चाहिए कि जो कुछ मंैने किया, वह केवल अपना

कर्तव्य किया। मारवाड़ के मौरूदा गाँव का जमींदार बुद्धन सिंह किसी झगड़े के कारण स्वदेश छोड़कर जयपुर चला गया और वहीं बस गया। थोड़े ही दिनों बाद मराठों ने मारवाड़ पर आक्रमण किया। यद्यपि बुद्धन मारवाड़ को बिल्कुल ही छोड़ चुका था तथापि शत्रुओं के आक्रमण का समाचार पाकर और मातृभूमि को संकट में पड़ा हुआ जानकर उसका रक्त उबल पड़ा। स्वदेश-भक्ति ने उसे बतला दिया, 'यह समय ऐसा नहीं है कि तू अपने घरेलू झगड़ों को याद करे। उठ, और अपना कर्तव्य पालन कर।'

इस विचार ने उसे इतना मतवाला कर दिया कि वह अपने एक सौ पचास साथियों को लेकर, बिना किसी से पूछे जयपुर से तुरन्त चल पड़ा। देश भर में मरहठे फैले हुए थे। उनके बीच में होकर निकल जाना कठिन काम था, परन्तु बुद्धन के साहस के सामने उस कठिनता को मस्तक झुकाना पड़ा। एक दिन अपने मुट्ठी भर साथियों को लिये वह मरहठों के बीच से होकर निकल ही गया। इस तरह निकल जाने से उसके बहुत से साथी रणक्षेत्र रूपी अग्नि-कुंड में आहुत हो गये। जीवित बचे हुओं में बुद्धन सिंह भी था। वह समय पर अपने देश और राजा की सेवा के लिए पहुँच गया।

इस घटना को हुए बहुत दिन हो गये, परन्तु आज तक वीर राजपूत अपने कर्तव्यपरायण वीर बुद्धन की वीरता को सम्मानपूर्वक याद करते हैं। राजपूत महिलाएँ आज भी बुद्धन और उसके वीर साथियों की वीरता के गीत गाती हैं। मौरूदा में आज भी एक स्तम्भ उन वीरों की यादगार में खड़ा हुआ, इतिहासवेत्ताओं के हृदय को उत्साहित करता है।

इन गुणों के अतिरिक्त सत्साहसी के लिए स्वार्थ-त्याग भी परमावश्यक है। इस संसार में हजारों ऐसे काम हुए हैं, जिनको लोग बड़े उत्साह से कहते और सुनते हैं। उन कामों को वे बहुत अच्छा समझते हैं और उनके करने वालों को सराहते हैं, परन्तु उन कामों में थोड़े से ही ऐसे हैं, जो स्वार्थ से खाली हों। समय पड़ने पर अपनी जान पर खेल जाने अथवा असामान्य साहस प्रकट करने में सदा आत्मोत्सर्ग नहीं होता क्योंकि बहुधा ऐसा काम करने वाले-यश के लोभ से, अपने नाम को कलंकित होने से बचाने के इरादे अथवा लूटमार के द्वारा धनोपार्जन करने की इच्छा से ऐसे मदान्ध हो जाया करते हैं कि वे अपने मतलब के लिए कठिन काम करने में संकोच नहीं करते।

सत्साहसी व्यक्ति में एक गुप्त शक्ति रहती है, जिसके बल से वह दूसरे मनुष्य को दुःख से बचाने के लिए प्राण तक देने को प्रस्तुत हो जाता है। धर्म, देश, जाति, और परिवार वालों के ही लिए नहीं, किन्तु संकट में पड़े हुए अपरिचित व्यक्ति के सहायतार्थ भी उसी शक्ति की प्रेरणा से वह हमारे संकटों का सामना करने को तैयार हो जाता है। अपने प्राणों की वह लेश मात्र भी परवाह नहीं करता। हर प्रकार के क्लेशों को प्रसन्नतापूर्वक सहता और स्वार्थ के विचारों को वह फटकने तक नहीं देता है।

सत्साहस के लिए अवसर की राह देखने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सत्साहस दिखाने का अवसर प्रत्येक मनुष्य के जीवन में, पल-पल में आया करता है। देश, काल और कर्तव्य का विचार करना चाहिए और स्वार्थरहित होकर साहस न छोड़ते हुए कर्तव्यपरायण बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

-गणेशशंकर 'विद्यार्थी'

गणेशशंकर 'विद्यार्थी' का जन्म सन् 26 अक्टूबर 1890 ई0 को प्रयाग में हुआ था। इनकी शिक्षा ग्वालियर में हुई। आर्थिक कठिनाइयों के कारण ये हाईस्कूल (एंट्रेंस) तक ही पढ़ सके किन्तु स्वतन्त्र अध्ययन में लगे रहे। ये कुछ दिन 'सरस्वती' पत्रिका फिर 'अभ्युदय' पत्र में कार्य करते रहे। बाद में ये 'प्रताप' साप्ताहिक के सम्पादक हुए। अपनी अतुल देशभक्ति एवं आत्मोत्सर्ग के लिए ये सदैव याद किये जाते हैं। इनकी भाषा सशक्त एवं शैली ओजपूर्ण, गाम्भीर्य एवं वक्रता- प्रधान है। इनका निधन 25 मार्च सन् 1931 ई0 को हुआ।

शब्दार्थ

विशाल=बड़ा। **वीरवर**=श्रेष्ठ वीर। **अभीष्ट**=वांछित, चाहा हुआ। **धरणी**=पृथ्वी। **कुत्सित**=बुरा। **आभा** =चमक। **सर्वोच्च**=सबसे ऊँचा। **अनभिज्ञ**=अनजान। **मुट्ठी भर**=थोड़े से। **रणक्षेत्र**=युद्ध भूमि। **आत्मोत्सर्ग**=स्वयं को बलिदान करना। **सहायतार्थ**=सहायता के लिए।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. लेखक ने साहस की विभिन्न श्रेणियाँ बतायी हंै। आपके जीवन में भी ऐसी कोई घटना घटी होगी अथवा अपने आस-पास व परिवार के सदस्यों से सुनी होगी जिसमें आपने या आप के आस-पास व परिवार के लोगों ने साहस का परिचय दिया होगा। उसका वर्णन कीजिए।

2. साहसी व्यक्तियों तथा बालकों की कहानियों को समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं से काटकर एकत्र कीजिए और पाठ के आधार पर उनके साहस का वर्गीकरण कीजिए।

3. हमारे देश में हर वर्ष 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस) की पूर्व संध्या पर बहादुर बच्चों को 'राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार' दिये जाते हैं। इन पुरस्कारों के बारे में विस्तार से जानकारी कीजिए तथा सभी को बताइए।

4. प्रत्येक पाठ के साथ ही लेखकों व उनकी कृतियों का परिचय संक्षेप में दिया गया है, नीचे दिये गये समूह 'क' के लेखकों के सम्मुख उनकी कृतियाँ समूह 'ख' से चुनकर अपनी पुस्तिका में लिखिए-

'क'	'ख'
जयशंकर प्रसाद	प्रेम वाटिका
रामावतार त्यागी	नदी के साथ
तेत्सुको कुरोयानागी	नया खून

रसखान युगधारा

रमेश उपाध्याय तोत्तोचान

नागार्जुन कामायनी

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र प्रेम-माधुरी

विचार और कल्पना

1. चित्र को देखकर आपके मन में जो विचार आ रहे हैं, उन्हें लिखिए।

2. आपके विचार से किसी डूबते हुए को बचाना किस प्रकार का साहस है ?

निबन्ध से

1. लेखक ने साहस की कितनी श्रेणियाँ बतायी हैं तथा उनकी क्या विशेषताएँ हैं ?

2. बुद्धन सिंह द्वारा सत्साहस का कौन-सा कार्य किया गया?

3. सत्साहसी व्यक्ति में कौन-सी गुप्तशक्ति रहती है, जिसके बल पर वह दूसरों को दुःख से बचाने के लिए प्राण तक दे सकता है ?

4. लेखक के अनुसार सत्साहस के लिए अवसर की राह देखने की आवश्यकता नहीं है, क्यों?

5. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

(क) बिना किसी प्रकार का साहस दिखलाये किसी जाति या किसी देश का इतिहास ही नहीं बन सकता।

(ख) कर्तव्य का विचार प्रत्येक साहसी मनुष्य में होना चाहिए।

(ग) कर्तव्य-ज्ञान-शून्य मनुष्य को मनुष्य नहीं, पशु समझना चाहिए।

भाषा की बात

1. 'बलिष्ठता' शब्द बलिष्ठ(प्रत्यय) से बना है। 'बलिष्ठ' शब्द विशेषण और 'बलिष्ठता' शब्द भाववाचक संज्ञा है। इसी प्रकार निम्नलिखित विशेषण शब्दों के साथ 'ता' प्रत्यय जोड़कर भाववाचक संज्ञा बनाइए-

पवित्र, उदार, दृढ़, अनभिज्ञ, कायर, कठोर, कोमल, मधुर।

2. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) रक्त उबल पड़ना

(ख) मस्तक झुकाना

(ग) जान पर खेल जाना

(घ) फटकने न देना

(ङ) अवसर की राह देखना

3. 'अग्निकुंड' तथा 'स्वदेश-भक्ति' सामासिक पद हैं। इनका विग्रह होगा- 'अग्नि का कुंड' तथा 'स्वदेश के लिए भक्ति'। इनमें क्रमशः- सम्बन्ध कारक तथा सम्प्रदान कारक का चिह्न लगा हुआ है। समास होने पर उनका लोप हो जाता है। नीचे लिखे शब्दों का समास-विग्रह कीजिए-

देश-प्रेम, क्रोधान्ध, इतिहास-वेत्ता, समाज-हित-चिन्तक, कर्तव्य-ज्ञान-शून्य

4. निम्नलिखित संज्ञा शब्दों को बहुवचन में बदलकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

माला, झरना, रोटी, आँख, कपड़ा, बालिका।

- इस निबन्ध पाठ के आधार पर आप भी दो प्रश्न बनाइए।

- इस निबन्ध पाठ से मैंने सीखा .....।

- अब मैं करुँगा/करुँगी.....।

इसे भी जानें

एडमन्ड हिलेरी तथा शेरपा तेनसिंह एवरेस्ट चोटी पर चढ़ने वाले प्रथम व्यक्ति थे।